स्वयंप्रकाश

अरे, वैज्जी कहाँ हैं?

हमारा मकान इतना बड़ा था कि उसे बाड़ा कहते थे। उसके तीन पते लगते थे – 13 जेल रोड, गली नम्बर तीन और 24 गंजी कम्पाउण्ड। मकान में पैंतीस परिवार रहते थे, एक स्कूल चलता था, एक किराने की दुकान थी, आँगन में एक कुँआ था। और सड़क की तरफ ऊपर-नीचे दो होटल भी थे – ऊपर आर्यावर्त भोजनालय और नीचे बजरंग जलपान गृह।

दोनों होटलों के पिछवाड़े हमारे दरवाज़े के ठीक सामने पड़ते थे। हम खुशबू से ही भाँप जाते थे कि आज आर्यावर्त में गोभी की सब्ज़ी बनी है या आज वहाँ बेसन भूना जा रहा है। बजरंग जलपान गृह में जब सेव बनाई जाती तो उसकी खुशबू सारे बाड़े में फैल जाती। मुँह में पानी आ जाता। बरसात के दिनों में शाम को अक्सर वहाँ प्याज़ के भजिए बनते। खुशबू से हमारी हालत खराब हो जाती। एक बार मुझसे रहा नहीं गया तो मैं देखने पहुँच गया कि भजिए किस प्रकार बनाए जा रहे हैं। लेकिन मेरे पहुँचने तक भजिए बन चुके थे और उसी समय किसी ने ढेर सारी कटी हुई हरी मिर्च छोंक दी थी। सारे में मिर्च की धाँस भर गई। सबके सब छींकने लगे, मैं भी। एक-दूसरे की हालत देखकर पेट पकड़-पकड़कर हँसने लगे।

एक दिन बजरंग जलपान गृह की रसोई में आग लग गई। कढ़ाई से तेल का भभका उठा और छत की शहतीरों ने आग पकड़ ली। जलती लकड़ी के टुकड़े इधर-उधर ठँसे रखे बोरों पर पड़े तो जगह-जगह से लपटें निकलने लगीं। देखते-देखते जाने कैसे आग की लपटें ऊपर आर्यावर्त भोजनालय तक पहुँच गईं जहाँ हड़बड़ी में किसी से ठोकर खाकर तेल का पीपा लुढ़क गया था। तेल में भीगी बोरियाँ एक के बाद एक सुलगने लगीं। नीचे भट्टी को बुझाने की कोशिश में उसमें घड़ा भर पानी उंडेल दिया गया... इससे राख, धुएँ और चिंगारियों का लपकता हुआ गुबार उठा और सब बाहर निकलने पर मजबूर हो गए। रसोई की दीवारें काली और छत नीची थी। वहाँ एक ही खिड़की थी जो धुएँ और कालिख से एकदम चीकट हो चुकी थी।

प्रभुराम ऊपर खड़ा ज़ोर-ज़ोर से "आग! आग!!" चिल्ला रहा था। भीड़ बाड़े में और बाहर भी इकट्ठा हो चुकी थी। भट्टी की आग दोबारा भड़की। लोग बाहर से ही अँधाधुन्ध पानी फेंके जा रहे थे जिससे फर्श पर कीचड़ ही कीचड़ हो गई थी।

प्रभुराम एक गोरा चट्टा, लहीम-शहीम आदमी था। मटर छीलने के लिए वह मटर से भरे बोरे को कपड़े धोने की मोगरी से कूटता था। हर वक्त वो ऊँची आवाज़ में हिन्दी फिल्मों के गाने मारवाड़ी में अनूदित करके गाता रहता था। "थारी प्यारी-प्यारी सूरत ने कणी री निजर नी लागे री ..." । गाते-गाते वह एकदम पतली-जनानी आवाज़ निकालने लगता था।

प्रभुराम को जैसे ही पता चला कि बजरंग वालों का गल्ला अन्दर रह गया है और गल्ले में नोट भरे हैं, उसने कमीज़ उतारते हुए हुँकार भरी – जिन्हें नाज़ है हिन्द पर वो कहाँ हैं? और एक गीली बोरी सिर पर डालकर सबके रोकते-रोकते आग में घुस गया। पाँच मिनट में प्रभुराम गल्ला निकाल लाया, लेकिन इतनी ही देर में एकदम गोरे से एकदम काला हो गया। उसका दाहिना हाथ जल गया था। उसे देखकर लग रहा था कि उसे भयंकर तकलीफ हो रही है।

तभी घण्टी घनघनाती हुई फायर ब्रिगेड आ गई। फायर ब्रिगेड को सूनी सड़क पर तेज़ी से भागते सबने देखा था, पर नज़दीक से किसी ने नहीं। तो तमाशबीनों की आधी भीड़ फायर ब्रिगेड की गाड़ी देखने भागी।

फायर ब्रिगेड के जवानों ने गहरे नीले रंग का कोट पेण्ट और काले बड़े जूते पहन रखे थे। सिर पर उनके बेहद खूबसूरत पीतल का चमचमाता हुआ हेलमेट था। लग रहा था जैसे वे सीधे हॉलीवुड की किसी फिल्म से या रोमन साम्राज्य के स्वर्णिम इतिहास से निकलकर आ रहे हों। मैंने उन्हें देखते ही निश्चय कर लिया कि चाहे दुनिया इधर से उधर हो जाए, मैं बड़ा होकर फायरमेन ही बनूँगा।

फायरवालों ने भीतर जाकर आग का जायज़ा लिया और फिर बाहर अपनी गाड़ी से बजरंग की रसोई तक एक चपटा केनवास का पाइप बिछा दिया। फिर उसके मुँह पर पीतल का एक बड़ा-सा नोज़ल लगा दिया और दो जवान उसे पकड़कर खड़े हो गए। मैं यही देखकर चकित था कि एक गट्टी में इतना लम्बा पाइप कैसे लिपटा था! इसके बाद ड्रायवर ने इंजन चालू किया और चपटा पाइप फूलने लगा और फूलते-फूलते एकदम गोल हो गया। उस पर खड़े हो जाओ तो भी न पिचके इतना कड़क। पाइप के नोज़ल से जिसे दो जवान पकड़े खड़े थे – पानी की खूब तेज़ धार निकली। धार इतनी तेज़ थी कि आग की तो क्या बिसात दीवारों के पलस्तर के चिप्पड़ उधड़-उधड़कर नीचे गिरने लगे। देखते-देखते बजरंग की रसोई में लाल-काले पानी का तालाब भर गया था। आग बुझ गई, धुँआ बाहर निकल गया और मकान और आँगन में पहले जो कीचड़ थी, अब दलदल बन गई थी। फायर ब्रिगेड वाले आधे घण्टे में आग बुझाकर अपना सामान समेटकर बगैर घण्टी घनघनाते चले गए।

उनके जाने के बाद बाड़े के लोगों में यह चर्चा शुरू हुई कि आग लगी कैसे और सबसे पहले किसने देखा, फायर ब्रिगेड को किसने बुलाया और नुकसान कितना हुआ। एक आदमी बीमे के फायदे समझाने लगा। हर कोई अपनी बहादुरी की डींगें हाँक रहा था। प्रभुराम को अस्पताल भेज दिया गया था। उसकी बहादुरी की सब तारीफ कर रहे थे। किसी ने कहा भला हो वैज्जी के लड़के का जिसने फायर ब्रिगेड वालों को फोन कर दिया।

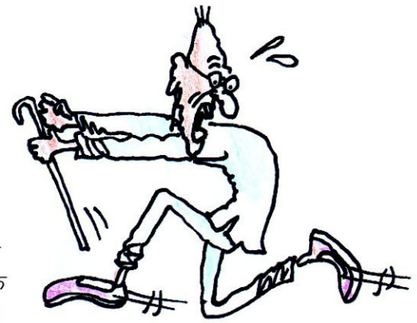

बाड़े के मर्द सोच रहे थे कि आग फैलते-फैलते उनके घर तक भी आ सकती थी। भट्टियाँ तो अब भी ऊपर-नीचे जलेंगी ही। ये तो हमेशा के लिए एक चिन्ता की बात हो गई।

तभी किसी ने कहा, "अरे वैज्जी कहाँ हैं वैज्जी? वैज्जी को देखा किसी ने?"

"क्यों? घर में नहीं हैं?"

"देखो-देखो! कहीं आग का सुनकर टटोलते-टटोलते नीचे गली में तो नहीं निकल गए?" नानाजी की खोज चालू हुई।

नानाजी कुटुम्बले वकील के यहाँ भी नहीं थे। लिमये के यहाँ भी नहीं। राजा की आई के घर भी नहीं। किराने की दुकान में भी नहीं। छत पर भी नहीं। लेटरीन में भी नहीं। बाहर नाई की दुकान पर भी नहीं। महेश डेयरी में भी नहीं। सन्दूकों वाली कोठरी में भी नहीं।

सारा बाड़ा परेशान हो गया! नानाजी कहाँ चले गए! नानाजी को दिखाई नहीं देता है। महीनों घर से बाहर नहीं निकलते हैं। निकलना भी पड़ा तो छड़ी लेकर और मुन्नू का या मेरा हाथ पकड़कर। और हाथ भी वे इतना कसकर पकड़ते हैं जैसे हम उन्हें बीच सड़क पर अकेला छोड़कर भाग जाने की सोच रहे हों!

नानाजी की खोज चल ही रही थी कि किसी ने बताया कि वैज्जी तो गेंदालाल की दुकान के पास खड़े हैं! "क्या बात करते तो? सबके मुँह खुले के खुले रह गए?"

"तू सच कह रहा है? किसी और को तो नहीं देख लिया? वैज्जी थे तो उन्हें ले क्यों नहीं आया?"

"मुझे क्या मालूम? मैं समझा कोई साथ होगा!"

गेंदालाल की दुकान हमारे घर से कोई दो सौ मीटर दूर है। रास्ते में चार गलियाँ, तीन चौराहे और जेल रोड का शोरभरा तेज़ ट्रेफिक है। बगैर किसी की मदद के अपनी छड़ी टेकते वैज्जी गेंदालाल की दुकान तक कैसे पहुँच गए?

खैर! फिर मैं उन्हें लेकर आया।

इस घटना के साल भर बाद भी जब भी इस घटना की बात चलती, सुनाने वाला फायर ब्रिगेड, छोटे मामा, प्रभुराम, कीचड़, धुँए आदि सबके बारे में विस्तार से बताता, पर अन्त में यह ज़रूर कहता... "और वैज्जी गेंदालाल की दुकान के पास मिले।"

नानाजी सुनते तो खिसियाकर अपनी टाँट पर हाथ फेरने लगते।